बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय
गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
को
पी–एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्ता:

बुद्धप्रकाश

iase
Deemed
university

शोध निर्देशक :

डॉ. राजकुमार माली

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर
जिला–चूरू (राजस्थान) – 331401

2016

<u>शोध– प्रारूप</u>

1. शोधकर्ता का नाम : बुद्धप्रकाश

2. संस्थान का पता : बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

3. शोध विषय : बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन।

1. –प्रस्तावना :–

भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन हेतु क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं के लिए जो लक्षित समूह रखे जाते हैं, प्रायः वे गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले परिवार होते हैं। 10वीं पंचवर्षीय योजना काल अर्थात् 2002–07 की अवधि के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सभी परिवारों का सर्वे किये जाने का कार्यक्रम सम्पादित किया जा रहा है, जिसे **'बीपीएल सेन्सस, 2002'** का नाम दिया गया है। इसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में रह रहे गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारो का अभिज्ञान कर चयन करने की कार्यवाही सम्पादित की जायेगी।

बीपीएल, सेन्सस, 2002 में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि कोई भी पात्र परिवार चयन होने से छूटे नहीं एवं अपात्र परिवार का चयन न हो सके।

बीपीएल परिवारों को सरकार द्वारा प्रदान की योजनाओं के अन्तर्गत शतप्रतिशत ग्रामीण परिवारों का उनके घर–घर जाकर सर्वे का कार्य सम्पादित किया जाता है। विभिन्न गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के तहत गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को लक्षित करने हेतु उनका सही चिन्हीकरण आवश्यक होता है।

बीपीएल सेन्सस, 2002 में प्रत्येक परिवार को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से जीवन यापन करने हेतु उनके पास उपलब्ध संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए उनका चिन्हीकरण 'अंक आधारित श्रेणी' प्रक्रिया अपनाते हुए किया जाता है। गत बार की तरह आय अथवा व्यय के आधार पर किसी परिवार का चयन बी.पी.एल. सूची में नहीं किया जाता है।

2. अध्ययन का महत्व :–

बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों के लिए सरकार आज बहुत सी योजना चला रही है जैसे – आपकी बेटी योजना एवं छात्रवृत्ति योजना इत्यादि। इन सभी योजनाओं का मुख्य आधार यही है कि किसी भी बी.पी.एल. विद्यार्थी अपने आपको हीन ना समझे। उनको भी वही सुविधा मिले जो सम्पन्न परिवार के सदस्यों को मिलती है।

शोधकर्ता ने बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों की पीड़ा को समझते हुए सरकारी योजनाओं के द्वारा उनका किस प्रकार से उन्नयन हो रहा है, इसको मद्देनजर रखते हुए उपर्युक्त समस्या पर शोधकार्य करने का निश्चय किया है।

3. अध्ययन का औचित्य :–

इस समस्या के सन्दर्भ में किये गये उपर्युक्त शोध कार्यों के साथ–साथ अन्य शोध कार्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि चयनित समस्या को लेकर आज तक कोई भी शोधकार्य नहीं हुआ है। शोधकर्ता को यह शोधकार्य इसलिए औचित्यपूर्ण लगा क्योंकि इस शोधद्वारा वह इस बात का पता लगाने में सफल हो सकता है कि सरकारी योजनाओं के द्वारा क्या सही में बी.पी.एल. परिवारों का उन्नयन सही तरीके से हो रहा है। अतः इसे अपने शोध का मुख्य प्रतिपाद्य विषय बनाया।

शोधार्थी को यह विश्वास है कि इस शोध का परिणाम शिक्षा जगत को योगदान देने में सहायक होगा।

4 . अध्ययन के उद्देश्य :–

1. बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों हेतु निर्धारित सरकारी योजनाओं को सूचीबद्ध करना।
2. बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों हेतु निर्धारित योजनाओं का विश्लेषण करना।
3. बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों हेतु योजनाओं का वर्तमान में मूल्यांकन करना।

5. अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

बी.पी.एल. परिवार :–

भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन हेतु क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं के लिए जो लक्षित समूह रखे जाते हैं, प्रायः वे गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले परिवार होते हैं। 10वीं पंचवर्षीय योजना काल अर्थात् 2002–07 की अवधि के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सभी परिवारों का सर्वे किये जाने का कार्यक्रम सम्पादित किया जा रहा है, जिसे 'बीपीएल सेन्सस, 2002' का नाम दिया गया है।

6. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

आशादेवी(1979) ने *"पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित किशोर छात्राओं की बौद्धिक एवं शैक्षिक समस्याओं का अन्वेषण"*[1] विषय पर शोधकार्य कर यह ज्ञात किया कि ये छात्राऐं अपने स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, अध्ययन सामग्री, दूसरों के साथ मिलने–जुलने, भूलने की आदत तथा संवेगात्मक अस्थिरता से चिन्तित रहती हैं।

[1] BUCH, M.B. "Third Survey of Research in Education" N.C.E.R.T., New Delhi March 1979 (1978-83) –Pg. 907.

तिवारी, पुरूषोत्तम लाल(1981) ने ***''राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन''***[2] विषय पर शोधकार्य कर निष्कर्ष निकाला कि पिछड़े वर्ग के उत्थान हेतु आयोजित शैक्षिक प्रयत्न नगण्य है, क्योंकि विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता उसको प्रदत्त शैक्षिक मार्गदर्शन तथा अनुकूल वातावरण पर आश्रित होती हैं और दलित छात्रों के पास ये दोनों ही सुविधाऐं नहीं होती। इसलिए आज भी ये पिछड़ेपन के अभिशाप से ग्रस्त हो जाते हैं।

नाथ, योगेन्द्र(1984) ने ***''मलिन बस्तियों के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन''***[3] शीर्षक पर शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि मलिन बस्तियों की शिक्षा प्राप्त करने वाली बालिकाएं शिक्षा प्राप्त नहीं करने वाली किशोर बालिकाओं की अपेक्षा शिक्षा प्राप्त करने की उच्च इच्छा रखती है। मलिन बस्तियों में शिक्षा प्राप्त करने वाले किशोरों की अपेक्षा किशोरियों का पढ़ने के प्रति दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक पाया गया। सभी किशोर किशोरियों में अच्छे विद्यालयों में पढ़ने की आकांक्षा पायी गयी।

कुमारी, चिंकारा(1996) ने ***''ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के संज्ञानात्मक विकास एवं गृह वातावरण का सम्बन्धात्मक अध्ययन''*** विषय पर शोधकार्य सम्पन्न कर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि पारिवारिक वातावरण, सृजनात्मकता के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है यदि पारिवारिक वातावरण समृद्ध व प्रोत्साहन देने वाला हो तो ग्रामीण क्षेत्र के बालकों का संज्ञानात्मक विकास अधिक होता है।

अग्रवाल, अर्चना(2000) ने ***''लखनऊ विश्वविद्यालय के तत्वाधान में पिछड़ी जाति के छात्रों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन''***[4] विषय पर शोधकार्य कर पाया कि शोधकार्य का उद्देश्य अनुसूचित जाति के छात्रों की वर्तमान में प्रमुख शैक्षिक समस्याओं को चिन्हित करना था। शोध का सार यह रहा कि पिछड़ी जाति के अधिकांशतः छात्रों को शिक्षा, साधन व सुविधाऐं अपने स्तर पर नहीं उपलब्ध करा

---

[2] BUCH, M.B. "Third Survey of Research in Education" N.C.E.R.T., New Delhi March 1979 (1978-83) –Pg. 377

[3] BUCH, M.B. "Fourth Survey of Research in Education" N.C.E.R.T., New Delhi Vol.-1 Feb. 1984, (1983-88)-Pg. 208

[4] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जनवरी–जून 2001 पेज–35

पा रहे हैं। अनुसूचित जाति के अभिभावक बालिकाओं की शिक्षा को आवश्यक नहीं मान रहे हैं। इस कारण से उनका शैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा है।

7. अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध में बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों के उन्नयन हेतु सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता को देखने हेतु सीकर जिले के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के बी. पी.एल. परिवार के 300 बालक–बालिकाओं को चयनित किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन Policy Research Type का होगा।

8. <u>शोधविधि एवं उपकरण</u> :–

प्रस्तुत शोध में विश्लेषणात्मक एवं मूल्यांकन विधि के अन्तर्गत स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची व साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा।

9. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम :–

प्रथम अध्याय :– शोध की सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि, औचित्य, समस्या कथन, परिभाषीकरण, उभरने वाले प्रश्न, उद्देश्य, आकल्प एवं सीमांकन।

द्वितीय अध्याय :– सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एवं प्रस्तावित शोध अध्ययन की उपादेयता।

तृतीय अध्याय :– बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों हेतु निर्धारित सरकारी योजनाएँ।

चतुर्थ अध्याय :– बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों हेतु निर्धारित योजनाओं का विश्लेषण।

पंचम अध्याय :– बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों हेतु योजनाओं का वर्तमान में मूल्यांकन

षष्ठ अध्याय :– निष्कर्ष , शोध की उपादेयता, कार्ययोजना एवं सुझाव।

10. शोधकार्य में लगने वाला समय :–

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :–

क.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	4 माह
2	द्वितीय अध्याय	4 माह
3	तृतीय अध्याय	4 माह
4	चतुर्थ अध्याय	3 माह
5	पंचम अध्याय	3 माह
6	षष्ठ अध्याय	4 माह
8	टंकण एवं बाईडिंग	2 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

BIBLIOGRAPHY

1. अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005), ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327
2. आचार्य, पं.श्रीराम शर्मा (2004), ''बच्चों को संस्कार माता–पिता ही दे सकते हैं'', ''युग निर्माण योजना'' ग्रायत्री तपोभूमि मथुरा, वर्ष 41 अंक 9, मार्च 2004 पृ. सं. 15–17
3. ढोढियाल, एस. पाठक (1990) ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या–51
4. दाधीच, नरेश एवं अन्य (2002) भारत मे शासन और लोकतन्त्र' भाग–दो, अल्का पब्लिकेशनंस, अजमेर पेज–216
5. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005)''पारिवारिक सुख के लिए है। किशोर मन की समझ'' श्रीविजय इन्द्र टाइम्स नई–दिल्ली, अंक–8, पृष्ठ संख्या–25
6. चौबे, सरयू प्रसाद (2005)''शिक्षा मनोविज्ञान'' इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, मेरठ पेज न.184

7. चौहान, एस.एस (1996)''सर्वांगीण बाल विकास'' आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली पेज प. 591

8. गोपाल, गुरू 1998''The Politics of Naming'' सेमीनार, पृष्ट 16, नवम्बर 1998

9. जायसवाल, सीताराम (1994)'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज 221

10. कपिल, एच के. (1979) अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या–23

11. कुंवर भुवनेन्द्र सिंह, (2004)''स्वाध्याय एक साधना'' कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ स. 511.

12. कोठारी, सी.आर. (2008)''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या–2

13. खान, ए.आर. (2005) ''जीवन कौशल शिक्षा'' माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर

डॉ. राजकुमार माली
शोध निर्देशक

बुद्धकाश
शोध छात्र